पाँच रत्न

चम्पापुर में बलभद्र नाम का एक धनवान सेठ रहता था। सेठ के पाँच पुत्र थे। पाँचों ही बड़े विनीत, सुन्दर और बुद्धिमान् थे।

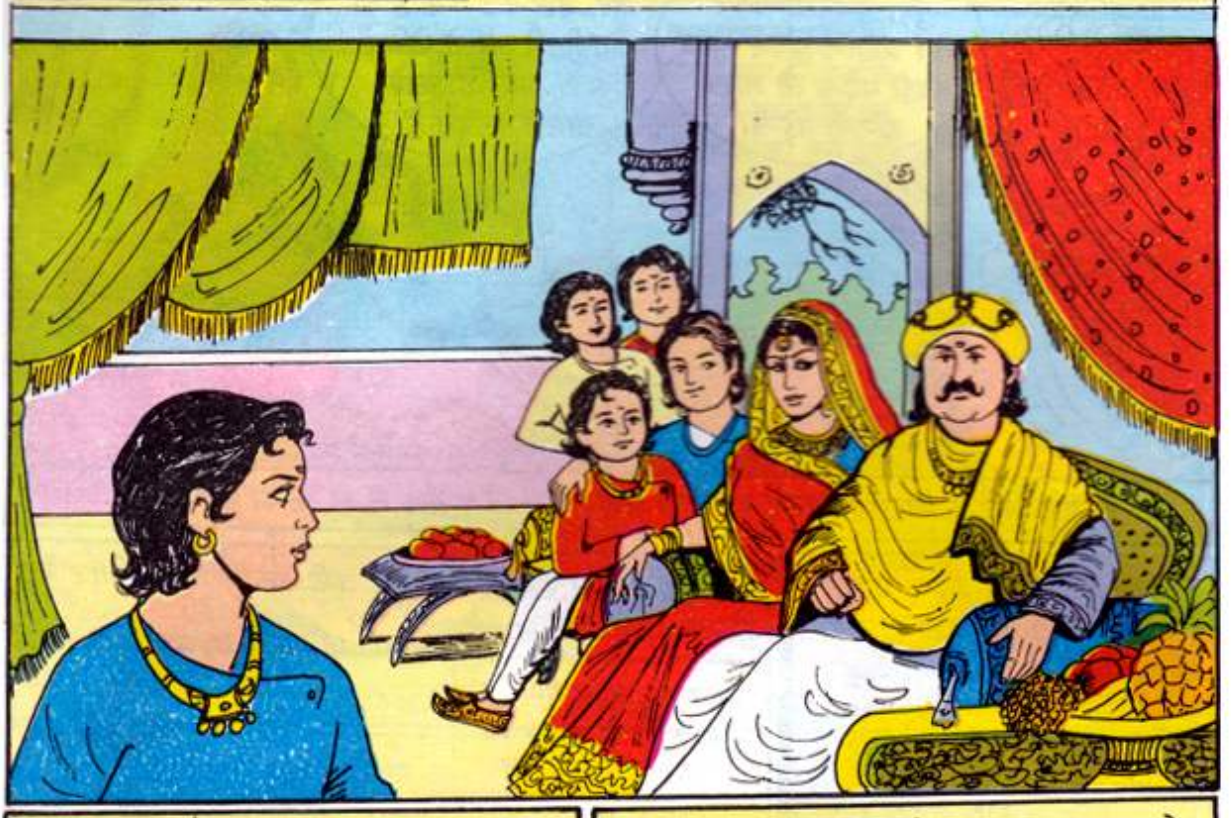

इस भरेपूरे सुखी परिवार को देखकर लोग कहते–

उसकी दुकान पर सुबह से शाम तक दूर-दूर के ग्राहकों की भीड़ लगी रहती थी–

सेठ की हवेली के सामने ही नगर का राजपुरोहित श्रीधर रहता था। उसके एक पुत्र था नारायण। नारायण खेलने और घूमने-फिरने का शौकीन था। श्रीधर उसको बार-बार समझाता–

माता के लाड़-प्यार के कारण नारायण पढ़-लिख नहीं सका। मौज शौक में ही उसका बचपन बीत गया।

एक दिन नारायण को अकेला छोड़कर उसके माता-पिता स्वर्गवासी हो गये। नारायण दुःखी होकर सोचने लगा–

वह बैठा-बैठा दुःखी हो रहा था। तभी उसकी नजर दीवार पर लिखे एक श्लोक पर पड़ी–

थोड़े दिन शोक में बिताने के बाद एक दिन उसने सोचा–

वे माता-पिता अपनी संतान के शत्रु हैं जिन्होंने अपनी सन्तान को शिक्षित नहीं किया।

वह देशाटन पर जाने की तैयारी करने लगा। घर का सामान सँभालते समय अचानक एक पुरानी मंजूषा उसके हाथ में आ गई। मंजूषा खोली तो वह चकित रह गया–

वाह, कितने चमकदार हैं ये पाँच रत्न। जरूर कभी राजा ने प्रसन्न होकर पिताजी को भेंट दिये होंगे।

वह मंजूषा को कपड़े में लपेटकर नगर के प्रसिद्ध जौहरी की दुकान पर ले गया और रत्न दिखाये। रत्न देखकर जौहरी चकित रह गया।

वत्स, यह तो बहुत ही कीमती रत्न हैं। कम से कम एक-एक करोड़ का एक-एक होगा। क्या इन्हें बेचना चाहते हो?

नहीं, बस, कीमत जानना चाहता था।

नारायण मंजूषा लेकर घर वापस आ गया और सुखद भविष्य के सपने देखने लगा–

अब मुझे कमाने की क्या जरूरत है। अब तो खूब मौज-शौक करूँगा, देश-विदेश घूमूँगा। देशाटन से आकर फिर एक रत्न बेचूँगा। बड़ा घर बन जायेगा। विवाह हो जायेगा। बस मौज से रहूँगा।

भविष्य के स्वप्न सँजोकर वह मन ही मन गुदगुदाने लगा। फिर उसने सोचा–

परन्तु पीछे से मंजूषा किसी ने चुरा ली तो। इसे कहीं सुरक्षित रख देना चाहिए।